International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

किशोरावस्था के विभिन्न परिपेक्ष्य : एक परिचय

Mrs. Alka Singh[1], Dr Vijay Kumar Gupta[2]
[1]Research Scholar, Kalinga University, Chhattisgarh, India
[2]Professor, Department of Education, Kalinga University, Chhattisgarh, India

Article Info
Volume 8, Issue 6
Page Number : 233-235

Publication Issue
November-December-2021

Article History
Accepted : 15 Nov 2021
Published : 08 Dec 2021

प्रस्तावना

किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी के ADOLESENCE शब्द का हिंदी पर्याय है वस्तुत किशोरावस्था यौनारंभ से परिपक्वता तक वृद्धि एवं विकास का काल है किशोरावस्था के काल के समय में विष्व में अलग–अलग देशों में अलग–अलग मान्यताएं हैं जैसे यूरोपीय देशों में किषोरावस्था का समय लड़कियों में लगभग 13 वर्ष से लेकर 19 वर्ष तक और लड़कों में 15 वर्ष से लेकर 21 वर्ष तक माना जाता है जबकि भारत में यह उम्र सीमा लड़कियों में 11 से 14 वर्ष तथा लड़को की उम 13 से 18 वर्ष तक किशोरावस्था की सीमा मानी जाती है किशोरावस्था का अर्थ बाल्यकाल समाप्त होने के पश्चात किशोरावस्था का आरंभ होता है किशोरावस्था को बाल्यावस्था और युवावस्था का संबंध काल भी कहा जाता है बाल्यकाल समाप्त होने के उपरांत अर्थात 13 वर्ष की आयु सीमा से शुरू हो जाती है इस अवस्था में लड़के एवं लड़कियों में तूफान और संवेग की अवस्था अधिक होती है इस अवस्था के बालक एवं बालिकाएं मूल्य आदर्षो और संवेगों में संघर्ष का अनुभव प्राप्त करते हैं। पहला परिभाषा क्रो एंड क्रो के अनुसार किशोर वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है दूसरा अंरषिल्ड के अनुसार वह समय जिसमें विचारशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर संक्रमण करता है उसे किशोरावस्था को कहा जाता है। तीसरा स्टैनले काल के अनुसार किशोरावस्था तनाव तूफान संघर्ष तथा विरोध की अवस्था है किशोरावस्था में शारीरिक विकास बाल्यावस्था के समाप्ति अर्थात बालक एवं बालिकाओं में के 10 वर्ष की उम्र सीमा को पार करते हैं ग्यारहवें एवं 12 में वर्ष की उम्र किशोरावस्था का प्रारंभ होने लगता है लडकियों में यह अवस्था 9 वर्ष से 13 वर्ष एवं लड़कों में 12 वर्ष से 15 वर्ष तक होती है इस अवस्था में लड़के और लड़कियों के शरीर में कुछ परिवर्तन होते हैं इस अवधि के दौरान लंबाई और दाढी में विकास होता है एवं इनमें कुछ समय बाद लैंगिक लक्षण दिखाई देने लगते हैं यह विकास यूरिक ग्रंथि से निकलने वाले हारमोंस की बढ़ोतरी से जुड़ा होता है जो न केवल अभिवृद्धि के उत्प्रेरक का कार्य करता है बल्कि अन्य ग्रंथियों एड्रिलन जनन ग्रंथि और थायराइड के नियंत्रक के रूप में कार्य करता है जिसके कारण उत्तकों में वृद्धि होती है और कार्यो को निर्धारित करता है।

1.0 संछिप्त परिचय

इस विकास की गति तीन से चार वर्ष अर्थात लड़कियों में 14 वर्ष तथा लड़कों में 16 वर्ष तक होती है इस विकास के समय यूरिक रांची आदि वृक्ष प्रांत आस्था और योनि ग्रंथि को अधिक सक्रियता प्रदान करती है एंड्रोजेनेटिक पुरुष और एस्ट्रो जेनेटिक महिला हारमोंस अधिवृक्क प्रांतस्था के द्वारा पिटयुटरी ग्रंथि के निर्देश के अनुसार दोनों लिंगों में भिन्नता लाती है पुरुष अधिक एंड्रोजेन और महिलाएं एस्ट्रोजन उत्पादित करते हैं लिंग हारमोंस वह पदार्थ है जिन का स्राव गोनेट द्वारा होता है और यह प्रजनन कार्यों और गौड़ यौन विशेषताओं का निर्धारण करते हैं टेस्टोस्टरॉन पुरुष लिंग हार्मोन है जो परिपक्व हो जाने पर गौड़ यौन विशेषताओं के लिए उत्तरदाई होता है जबकि महिला के शरीर में यही कार्य एस्ट्रोजन द्वारा किया जाता है क्रो एवं क्रो के अनुसार किशोरावस्था में शारीरिक विकास निम्न होते हैं पहला भार– इस अवस्था में लड़कों का भार लड़कियों के भार से लगभग

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

25 पौंड अधिक होता है दूसरा लंबाई इस अवस्था में लड़के एवं लड़कियों की लंबाई तेजी से बढ़ती है बालकों में यह लंबाई 18 वर्ष तक तेजी से होती है उसके बाद भी कुछ बढ़ती है जब की लड़कियां अपनी अधिकतम आयु 16 वर्ष की उम्र तक प्राप्त कर लेते हैं तीसरा सिर एवं मस्तिष्क इस अवस्था में सिर एवं मस्तिष्क का विकास जारी रहता है 15–16 वर्ष की आयु में सिर और मस्तिष्क का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है चौथा हड्डियां इस अवस्था में हड्डियां में पूरी मजबूती आ जाती है कुछ छोटी हड्डियां एक दूसरे से जुड़ जाती हैं पांचवा दांत इस अवस्था में आते आते लड़के और लड़कियों के स्थाईदांत आ जाते हैं एवं प्रज्ञा दंत निकलने लगते हैं अन्य अंग इस अवस्था में मांसपेशियों का विकास तेजी से होता है 12 वर्ष की उम्र में मांस–पेशियों का कुल भार लगभग 33% से 35% होता है एवं 16 वर्ष की आय में यह भार लगभग 44 % से 46% तक होता है हृदय की धड़कन में निरंतर कमी होती है जो प्रौढ़ावस्था में 1 मिनट में 72 बार होती है बालकों के सीने और कंधे तथा बालिकाओं के वक्षस्तन एवं कूल्हे चौड़े हो जाते हैं बालक में स्वप्नदोष एवं बालिकाओं में मासिक धर्म आरंभ हो जाता है दोनों के यौन अंगपूर्ण रूप से विकसित हो जाते हैं।

2.0 अनुसंधान

अनुसंधान किसी भी विषय या किसी क्षेत्र के संबंध में कुछ नई जानकारी खोज करना एवं वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुए जिज्ञासा का समाधान करने के प्रयास किए जाते हैं तो उसे अनुसंधान कहा जाता है एवं अपने शोध में बोध पूर्वक किए गए प्रयत्न से तथ्यों को संकुलित करते हुए एक नए सिद्धांत की रचना भी की जाती है । किसी विषय पर उचित एवं

अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुसंधान को व्यवस्थित एवं कठोर खोज के रूप में किया जा सकता है शोधकर्ता द्वारा अनषा अनुसंधान करने के लिए निम्न विधियों का उपयोग किया जाता है अनुसंधान विधि की परिभाषा अनुसंधान विधि उन सभी उपायों से संबंधित है जो शोधकर्ता अपने विषय को हल करने के लिए अर्थात अनुसंधान प्रक्रिया शुरू करने के लिए कार्य करता है अनुसंधान के अध्ययन के दौरान लागू किए जाने वाली तकनीकों और प्रक्रिया को शोध पद्धति के रूप में माना जाता है अनुसंधान संचालन के लिए सर्वेक्षण केस स्टडी साक्षात्कार प्रश्नावली आदि का अवलोकन किया जाता है अनुसंधान विधियों के तीन श्रेणी हैं प्रथम ए श्रेणी इसके अंतर्गत वे सभी विधियां सम्मिलित होते हैं जो डेटा संग्रह में मदद करते हैं इस तरीकों का उपयोग उस समय किया जाता है जब समाधान के लिए कोई डाटा उपलब्ध नहीं होता दूसरा बी इसका उपयोग पैटर्न की पहचान और डाटा के अज्ञात के बीच संबंध स्थापित करने के लिए किया जाता है तीसरा सी इसका उपयोग परिणामों की सही सत्यता की जांच करने के लिए किया जाता है यह षोध अनुसंधान निम्नलिखित विधियों द्वारा किया जाता है–

1 मात्रक विधि यह षोध विधि आंकड़ों पर आधारित होती है एवं इसके निष्कर्ष भी आंकड़ों द्वारा ही निर्धारित होते हैं यह विधि आदेशात्मक है यदि किसी भी प्रकार के पक्ष और भाव से रहित होता है मात्रात्मक शोध विधि में सूचना सांख्यिकी के रूप में होता है और परिणाम या प्रभाव के बीच केंद्रित होता है।

2 गुणात्मक अनुसंधान विधि इस अनुसंधान विधि में माना जाता है कि मानव व्यवहार को गणित के स्रोतों में नहीं बांधा जा सकता गणात्मक विधि का मुख्य उद्देश्य मानव व्यवहार एवं उसे नियंत्रित करने वाले कारणों को गहराई से समझने के लिए होता है इस विधि में आमतौर पर लेख का प्रयोग नहीं करते हैं यह एक खुला विकल्प होता है यह विधि बहुत ही लचीला होता है इस विधि में व्यक्तिगत अनुभव के विश्लेषण पर अधिक जोर दिया जाता है इस विधि में प्रत्यक्ष अवलोकन गहन साक्षात्कार कथात्मक घटनाजन्य व्यक्तिगत अध्ययन जैसे बिंदु पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

3 सर्वेक्षण अनुसंधान विधि सर्वेक्षण अनुसंधान विधि समाज वैज्ञानिक की खोज की वह शाखा है जो समाजशास्त्री एवं मनोवैज्ञानिक चरों की सापेक्ष घटना आवंटन और पारस्परिक संबंधों का पता लगाने के लिए किया जाता है सामाजिक चरों से आशय उन गुणों से है जो व्यक्तियों को समाज में रहने के कारण विकसित होते हैं जैसे धर्म जाति लिंग और परिवार विवाह वेषा इत्यादि। मनोवैज्ञानिक चर की श्रेणी में लोगों के विश्वास मूल्य पूर्व ग्रहों अभिरुचि इत्यादि को शामिल किया जाता है।

4.0 निष्कर्ष

किशोरावाथा के प्रमुख लक्षण – किषोरावस्था के प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं (1) रैपिड फिजिकल इसके अंतर्गत किशोर लड़के और लड़कियों के शरीर में कुछ परिवर्तन होते हैं जैसे लड़को में देखा जाता है कि उनकी दाढ़ी और मूंछ तथा गुप्तांग में और बांह के नीचे बाल आने लगते हैं तथा लड़कियों के शरीर में स्तन का विकास गुप्तांग पर बाल और मासिक धर्म शुरू हो जाता है लड़को की आवाज भारी होने लगते हैं और लड़कियां षर्मीली होने लगती हैं दोनो के जननांगों से हार्मोंस स्राव होने लगता है तथा दोनों ही यौन संबंधों के लिए परिपक्व हो जाते हैं इस अवस्था में लड़के और लड़कियां अपने यौन उत्तेजना में गलत सम्बंध स्थापित कर लिया करते हैं परिणामस्वरूप समाज के भय से घर से भाग जाते हैं। क्योंकि उन्हें अपने बेइज्जत महसूस करते हैं साथ ही अपने काम पूर्ति के लिए तैयार हो जाते हैं और अपने माता पिता के इज्जत का भी ख्याल नहीं करते लड़कियों पर मेनार्चे के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को ज्ञात करने के लिए कई अध्ययन किए गए हैं पूर्वव्यापी अध्ययन से पता चलता है कि घटना कुछ अप्रिय है सामाजिक समर्थन के कमी के कारण और अधिक मेनार्च के बाद लड़कियां अधिक नकारात्मक भावनावो या अनुभवों को महसूस करती है और उसका बाव्यक्तित्व भी प्रभावित होता है।

(2) सूरत चेतना किशोरावस्था के दौरान लड़के और लड़कियां दोनों अपनी उपस्थिति के बारे में सचेत हो जाते है उनका शारीरिक परिवर्तन बहुत तेजी से होता है इस समय किशोर एवं किशोरियां एक दूसरे की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं ये सुन्दर दिखाने के लिए प्रसाधन के साधनों का उपयोग करते हैं ये दोनों अपने पोषाक बालशैली इत्यादि को लेकर हमेशा कोशिष करते हैं हमेंषा आईना निहारते हैं किशोर एवं किशोरियों स्वयं के स्वरूप पर आसक्त हो जाते है लेकिन यह स्थिति लंबे समय तक नहीं रहता है किशोर किशोरियां एक दूसरे की ओर ज्यादा आकर्षित होते है यह उनकी मुख्य चिंता का विषय बन जाता है ये दोनों एक दूसरे की आंखों में अपने प्रति दृष्टिकोण को पढ़ने की कोशिश करते हैं विपरीत लिंग की उपस्थीती कई बार असहज के देता दुस्परिणाम किसी के प्रति ईर्ष्या हो सकती है जिनका मुकाबला वह नहीं कर सकता है इसलिए वह चिन्तित रहने के कारण उसका व्यवहार विकृत हो जाता है शारीरिक दोष या आकर्षण में कमी कल्पना या वास्तविकता दोनो ही मामले में शर्मिला किशोर पीछे हट जाता है यह दोष उसे जन्मजात या पश्चात के रूप में विकसित हो जाता है जब किसी के साथ जुनून हो जाता है तो फिर शरीर में डिफार्मिंग विकार बहुत ही विनाशकारी साबित होता है या किशोर चिड़चिड़ा हो सकता है और इस अवस्था में वह स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सकता है और घर छोड़ने या फिर आत्महत्या जैसे भयानक और दुखद कदम उठा लिया करते हैं।

सन्दर्भ

1. Barratt ES, Stanford MS, Kent TA, Felthous A. Neuropsychological and cognitive psychophysiological substrates of impulsive aggression. *Biol Psychiatry.* 1997;41:1045–61. [PubMed] [Google Scholar]
2. Barratt ES. Impulsivity: Integrating cognitive, behavioral, biological and environmental data. In: McCowan W, Shure M, editors. *The impulsive client: Theory, research and treatment.* Washington DC: American Psychological Association; 1993. [Google Scholar]
3. Barratt ES. The biological basis of impulsiveness: The significance of timing and rhythm disorders. *Pers Individ Dif.* 1983;4:387–91. [Google Scholar]
4. Fossati A, Barratt ES, Acquarini E, Ceglie , AD Psychometric properties of an adolescent version of the Barratt Impulsiveness Scale-11 (BIS-11-A) in a sample of Italian High school students. *Percept Mot Skill.* 2002;95:621–35. [PubMed] [Google Scholar]
5. Patten JH, Stanford MS, Barratt ES. Factor structure of Barratt impulsiveness scale. *J Clin Psychol.* 1995;51:768–74. [PubMed] [Google Scholar]
6. Someya T, Sakado K, Seki T, Kojima M, Reist C, Tang SW, et al. The Japanese version of the Barratt Impulsiveness Scale, 11th version (BIS-11): Its reliability and validity. *Psychiatry Clin Neurosci.* 2001;55:111–14. [PubMed] [Google Scholar]
7. Bayle FJ, Bourdel MC, Caci H, Gorwood P, Chignon JM, Ades J, Loo H. Factor analysis of French translation of the Barratt impulsivity scale (BIS-10) *Can J Psychiatry.* 2000;45:156–65. [PubMed] [Google Scholar]
8. Zar JH. *Biostatistical analysis.* 4th ed. Pearson education. India branch, Delhi: Singapore Pvt. Ltd; 1999. [Google Scholar]
9. American Psychiatric Association. *Diagnostic and statistical manual of mental disorders.* 4th ed. Washington DC: American Psychiatric Press; 2004. [Google Scholar]
10. Barratt ES, Stanford , MS . Impulsiveness. In: Costello CG, editor. *Personality characteristics of the personality disordered.* New York: John Wiley and Sons, Inc; 1995. [Google Scholar]
11. Caci H, Martiei V, Bayle FJ, Nadalet L, Dossios C, Robert P, et al. Impulsivity but not venturesomeness is related to morningness. *Psychiatry Res.* 2005;134:259–65. [PubMed] [Google Scholar]
12. Corruble E, Benyamiona A, Bayle F, Falissard B, Hardy P. Understanding impulsivity in severe depression? A psychometrical contribution. *Prog Neuropsychopharmacol Biol Psychiatry.* 2003;27:829–33. [PubMed] [Google Scholar]
13. Dervaux A, Bayle FJ, Laqueille X, Bourdel MC, Le Borgne MH, Olie JP, et al. Is substance abuse in schizophrenia related to impulsivity, sensation seeking, or anhedonia? *Am J Psychiatry.* 2001;58:492–4. [PubMed] [Google Scholar]
14. Swann AC, Dougherty DM, Pazzaglia PJ, Pham M, Steinberg JL, Moeller FG. Increased impulsivity associated with severity of suicide attempt history in patients with bipolar disorder. *Am J Psychiatry.* 2005;162:1680–7. [PubMed] [Google Scholar]
15. Martins SS, Tavares H, Da Silva Lobo DS, Galetti AM, Gentil V. Pathological gambling, gender and risk-taking behaviors. *Addict Behav.* 2004;29:1231–5. [PubMed] [Google Scholar]